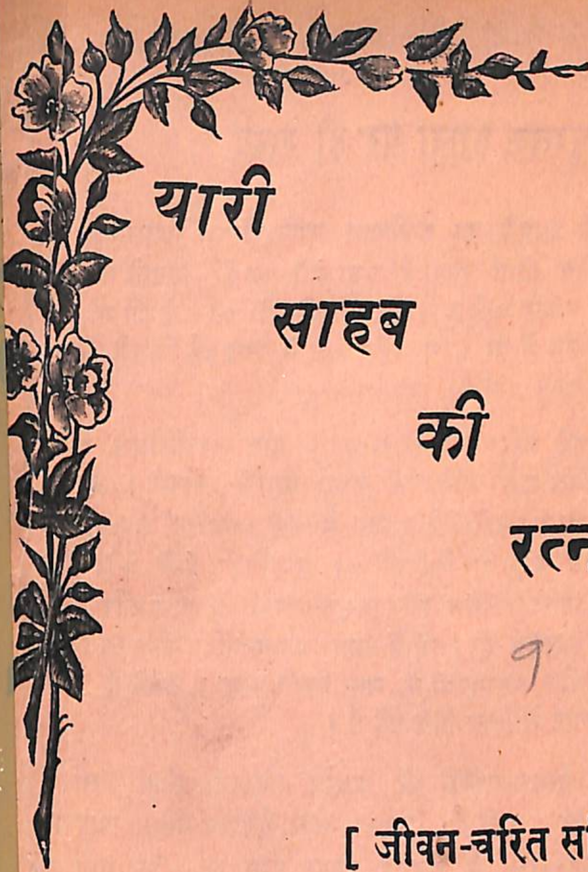
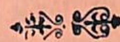


यारी साहब की रत्नावली

[जीवन-चरित सहित]



प्रकाशक
बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद

४० पैसे

संतबानी पुस्तक-माला पर दो शब्द

संतबानी पुस्तक-माला के छापने का अभिप्राय जगत-प्रसिद्ध महात्माओं की बानी और उपदेश का जिनका लोप होता जाता है बचा लेने का है जितनी बानियाँ हमने छापी हैं उनमें से विशेष तो पहिले कहीं छपी ही नहीं थीं और जो छपी भी थीं सो प्राय: ऐसे छिन्न भिन्न और बेजोड़ रूप में या क्षेपक और त्रुटि से भरी हुई जिससे उन से पूरा लाभ नहीं उठाया जा सकता था।

हमने देश देशान्तर से बड़े परिश्रम और व्यय के साथ हस्तलिखित दुर्लभ ग्रन्थ या फुटकल शब्द जहाँ तक मिल सके असल या नकल कराके मँगवाये। भरसक तो पूरे ग्रन्थ छापे गये हैं और फुटकल शब्दों की हालत में सर्व साधारण के उपकारक पद चुन लिये हैं, प्राय: कोई पुस्तक बिना दो लिपियों का मुकाबिला किये और ठीक रीति से शोधे नहीं छापी गई है, और कठिन और अनूठे शब्दों के अर्थ और संकेत फुट नोट में दे दिये गये हैं। जिन महात्मा की बानी है उनका जीवन चरित्र भी साथ ही में छापा गया है। और जिन भक्तों और महापुरुषों के नाम किसी बानी में आये हैं उनके बृतान्त और कौतुक संक्षेप में फुटनोट में लिख दिये गये हैं।

दो अन्तिम पुस्तकें इस पुस्तक-माला की अर्थात संतबानी संग्रह भाग १ (साखी) और भाग २ (शब्द) छप चुकी हैं, जिनका नमूना देखकर महामहोपाध्याय श्री पंडित सुधाकर द्विवेदी बैकुण्ठ-बासी ने गद्गद होकर कहा था—"न भूतो न भविष्यति"।

एक अनूठी और अद्वितीय पुस्तक महात्माओं और बुद्धिमानों के बचनों की 'लोक परलोक हितकारी" नाम की गद्य में सन् १९१९ में छपी है, जिसके विषय में श्रीमान् महाराजा काशी नरेश ने लिखा है—"वह उपकारी शिक्षाओं का अत्तरजी संग्रह है; जो सोने के तोल सस्ता है।"

पाठक महाशयों की सेवा में प्रार्थना है कि इस पुस्तकमाला के जो दोष उनकी दृष्टि में आवें उन्हें हमको कृपा करके लिख भेजें जिससे वह दूसरे छापे में दूर कर दिये जावें।

कुल पुस्तकों की सूची नीचे लिखे पते से मुफ्त मँगाइए।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला कार्यालय, बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स,
१३, मोतीलाल नेहरू रोड, इलाहाबाद—२

यारी साहब की रत्नावली

और

जीवन-चरित्र

जिसमें

उन महात्मा के अति मनोहर और
अंतरी भेद से भरे हुए पद
दिये हैं। और गूढ़ शब्दों
के अर्थ व संकेत
भी नोट में
लिख दिये
गये
हैं।

मुद्रक व प्रकाशक

बेलवीडियर प्रिंटिंग वर्क्स, इलाहाबाद।

१९७१

[मूल्य ४० पैसे

जीवन-चरित्र

यारी साहब के जीवन का हाल बहुत खोज करने पर भी कुछ नहीं मिलता सिवाय इसके कि वह जाति के मुसलमान थे और दिल्ली में अपने गुरू बीरू साहब की सेवा में रहते थे और उनके चोला छोड़ने पर उसी जगह बने रहकर अपना सतसंग कराने लगे। दिल्ली में यारी साहब की समाध मौजूद है।

उनके इस संसार में रहने का समय दर्मियान विक्रमी सम्बत् १७२५ और १७८० के पाया जाता है।

यारी साहब के बुल्ला साहब गुरुमुख चेले हुए जो गुलाल साहब के गुरू और भीखा साहब के दादागुरू थे, जैसा कि आगे दी हुई बंशावली से जान पड़ता है। चार चेले उनके और प्रसिद्ध थे—केशवदास जी, सूफी शाह, शेखन शाह और हस्त मुहम्मद शाह।

यारी साहब की बानी कहीं नहीं मिलती, जो शब्द हम छाप रहे हैं वह बड़ी खोज से थोड़ा थोड़ा करके दिल्ली, ग़ाजीपुर और बलिया के जिलों से मिले हैं। इन महात्मा की बड़ी ऊँची गति और प्रचंड भक्ति और शब्द मार्गी होना उनकी बानी के अंग अंग से झलकता है—सब पद अति कोमल, प्रेम रस में पगे और अंतरी भेद से भरे हुए हैं और जैसा कि उनके शब्दों के संग्रह का नाम "रत्नावली" है, सचमुच हर एक पद उसका एक अनमोल रत्न है।

यारी साहब के नाम से कोई पंथ नहीं चला जैसा कि उन्हीं के गुरू घराने में बहुत समय पीछे जगजीवन साहब और भीखा साहब और पलटू साहब के नाम से पंथ क़ायम हुए॥

बावरी साहब (दिल्ली)
|
बीरू साहब
|
यारी साहब
|
बुल्ला साहब (भुरकुड़ा, ज़िला ग़ाज़ीपुर)
|
जगजीवन साहब — गुलाल साहब

जगजीवन साहब
|
दूलनदासजी

गुलाल साहब
|
भीखा साहब
|
गोबिन्द साहब (अहिरौली, ज़िला फ़ैज़ाबाद)
|
पलटू साहब (अयोध्या)

यारी साहब की रत्नावली

॥ शब्द १ ॥

बिरहिनी मंदिर दियना बार ॥ टेक ॥

बिन बाती बिन तेल जुगति सों, बिन दीपक उँजियार ॥ १ ॥
प्रान पिया मेरे गृह आयो, रचि पचि सेज सँवार ॥ २ ॥
सुखमन सेज परम तत रहिया, पिय निर्गुन निरकार ॥ ३ ॥
गावहु री मिलि आनँद मङ्गल, यारी मिलि के यार ॥ ४ ॥

॥ शब्द २ ॥

हौं[1] तो खेलौं पिया सँग होरी ॥ १ ॥

दरस परस पतिबरता पिय की, छबि निरखत भइ बौरी ॥ २ ॥
सोरह कला सँपूरन देखौं, रवि ससि भे इक ठौरी ॥ ३ ॥
जब तें दृष्टि परो अबिनासी, लागो रूप ठगौरी ॥ ४ ॥
रसना रटत रहत निस बासर, नैन लगो यहि ठौरी[2] ॥ ५ ॥
कह यारी भक्ती करु हरि की, कोई कहे सो कहौ री ॥ ६ ॥

॥ शब्द ३ ॥

दिन दिन प्रीति अधिक मोहिं हरि की ॥ १ ॥

काम क्रोध जञ्जाल भसम भयो, बिरह अगिनि लगि धधकी ॥२॥
धुधुकि २ सुलगति अति निर्मल, झिलमिल झिलमिल झलकी ।३।
झरि झरि परत अँगार अधर यारी, चढ़ि अकास आगे सरकी ।४।

॥ शब्द ४ ॥

रसना राम कहत तें थाको ॥ १ ॥

पानी कहे कहुँ प्यास बुझत है, प्यास बुझै जदि चाखो ॥ २ ॥
पुरुष नाम नारी ज्यों जानै, जानि बूझि नहिं भाखो ॥ ३ ॥
दृष्टि से मुष्टी नहिं आवै, नाम निरंजन वा को ॥ ४ ॥
गुरु परताप साधु की संगति, उलटि दृष्टि जब ताको ॥ ५ ॥
यारी कहै सुनो भाई संतो, बज्र बेधि कियो नाको[3] ॥ ६ ॥

---

(१) मैं। (२) जगह। (३) रास्ता।

॥ शब्द ५ ॥

हमारे एक अलह पिय प्यारा है ॥ १ ॥
घट घट नूर मुहम्मद साहब, जा का सकल पसारा है ॥ २ ॥
चौदह तबक जा की रुसनाई, झिलमिलि जोति सितारा है ॥३॥
बेनमून बेचून अकेला, हिंदु तुरुक से न्यारा है ॥ ४ ॥
सोइ दरवेस दरस निज पायो, सोई मुसलम सारा है ॥ ५ ॥
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, यारी यार हमारा है ॥ ६ ॥

॥ शब्द ६ ॥

निरगुन चुनरी निर्बान, कोउ ओढै संत सुजान ॥ १ ॥
षट दरसन में जाइ खोजो, और बीच हैरान ॥ २ ॥
जोति सरूप सुहागिनि चुनरी, आव बधू धरि ध्यान ॥ ३ ॥
हद बेहद के बाहरे यारी, संतन को उत्तम ज्ञान ॥ ४ ॥
कोऊ गुरु गम ओढ़ै चुनरिया, निरगुन चुनरी निरबान ॥ ५ ॥

॥ शब्द ७ ॥

हरि जन जीवता नहिं मुआ ॥ टेक ॥
पाँच तीन पचीस पायक, बाँधि डारु कुआ ॥ १ ॥
अष्ट दल के कमल भीतर, बोलता इक सुआ ॥ २ ॥
तोरि पिंजर उड़न चाहत, प्रेम परगट हुआ ॥ ३ ॥
सीव के घर सक्ति आई, खेलता जम जुआ ॥ ४ ॥
काटि कसमल[1] चढ़ो भाठी, सेस ससि घर चुआ ॥ ५ ॥
गगन मद्धे सुरति लागी, सब्द अनहद हुआ ॥ ६ ॥
दास यारी तासु बलि बलि, देत सतगुरु दुआ[2] ॥ ७ ॥

॥ शब्द ८ ॥

झिलमिल झिलमिल बरखै नूरा, नूर जहूर सदा भरपूरा ॥१॥
रुनझुन रुनझुन अनहद बाजै, भँवर गुँजार गगन चढ़ि गाजै ।२।

(१) कलिमल । (२) बढ़ती मनाना ।

रिमझिम रिमझिम बरखै मोती, भयो प्रकास निरंतर जोती ॥३॥
निरमल निरमल निरमल नामा, कह यारी तहँ लियो बिस्रामा ।४।

॥ शब्द ९ ॥

आरति करो मन आरति करो ॥ १ ॥
गुरु प्रताप साधु की संगति, आवा गवन तें छूटि पड़ो ॥२॥
अनहद ताल आदि सुध बानी, बिनु जिभ्या गुन बेद पढ़ो ॥३॥
आपा उलटि आतमा पूजो, त्रिकुटी न्हाइ सुमेर चढ़ो ॥४॥
सारँग सेत सुरति सों राखो, मन पतंग[1] होइ अजर जरो ॥५॥
ज्ञान कै दीप बरै बिनु बाती, कह यारी तहँ ध्यान धरो ॥६॥

॥ शब्द १० ॥

या बिधि भजन करो मन लाई ।
निर्मल नाम लखो बिनु लोचन[2], सेत फटिक रोसनाई[3] ॥१॥
सीप कि सुरति अकास बसत जस, चित चकोर चंदाई ।
कुंभक नीर[4] उलटि भरो जैसे, सागर बुंद समुंद समाई ॥२॥
जैसे मृग[5] की रीति परस्पर, लोह कंचन है जाई ।
मन गगरी पर बात सखिन सँग, कुंभ-कला नट लाई[6] ॥३॥
तत्त तिलक छापा मन मुद्रा, अजपा जाप तिर[7] पाई ।
भँवरगुफा ब्रह्मंड मेखला, जोग जुगति बनि आई ॥४॥
बाँबी उलटि सर्प को खाइ, ससि[8] में मीन नहाई ।
यारीदास सोई गुरु मेरा, जिन यह जुगति बताई ॥५॥

॥ शब्द ११ ॥

जोगी जुगति जोग कमाव ॥ टेक ॥
सुखमना पर बैठि आसन, सहज ध्यान लगाव ॥ १ ॥
दृष्टि सम करि सुन्न सोवो, आपा मेटि उड़ाव ॥ २ ॥
प्रगट जोति अकार अनुभव, सब्द सोहं गाव ॥ ३ ॥

---

(१) पतंगा। (२) आँख। (३) जैसे फटिक मणिका उज्ज्वल प्रकाश (४) घड़े में पानी। (५) हिरन नाद पर आशिक है। (६) जैसे सखियाँ पानी के घड़े पर घड़ा रख कर चलती हैं और नट घड़ों का खेल करता है यानी घड़े सिर पर रक्खे हुए रस्सी पर चलता है लेकिन इन दोनों की सुरत घड़े पर रहती है। (७) तीर, किनारा। (८) चन्द्रमा।

छोड़ि मठ को चलहु जोगी, बिना पर उड़ि जाव ॥ ४ ॥
यारी कहै यह मत बिहंगम, अगम चढ़ि फल खाव ॥ ५ ॥

॥ शब्द १२ ॥

मन मेरा सदा खेलै नट बाजी, चरन कमल चित राजी ॥टेक॥
बिनु करताल पखावज बाजै, अगम पंथ चढ़ि गाजी ।
रूप बिहीन सीस बिनु गावै, बिनु चरनन गति साजी ॥१॥
बाँस सुमेरु[1] सुरति कै डोरी, चित चेतन सँग चेला ।
पाँच पचीस तमासा देखहि, उलटि गगन चढ़ि खेला ॥२॥
यारी नट ऐसी बिधि खेलै, अनहद ढोल बजावै ।
अनँत कला अवगति अनमूरति, बानक[2] बनि बनि आवै ॥३॥

॥ शब्द १३ ॥

मन ग्वालिया सत सुकृत तत दुहि लेह ॥ टेक ॥
नैन दोहनि[3] रूप भरि भरि, सुरति सब्द सनेह ॥ १ ॥
निझर झरत अकास ऊठत, अधर अधरहिं देह ॥ २ ॥
जेहि दुहत सेस महेस ब्रह्मा, कामधेनु बिदेह[4] ॥ ३ ॥
यारी मथ के लयौ माखन, गगन मगन भखेह[5] ॥ ४ ॥

॥ शब्द १४ ॥

चंद तिलक दिये सुन्दरि नारी । सोइ पतिबरता पियहिं पियारी ।१।
कंचन कलस धरे पनिहारी । सीस सुहाग भाग उँजियारी ॥२॥
सब्द सेंदुर दै माँग सँवारी । बेंदी अचल टरत नहिं टारी ॥३॥
अपन रूप जब आपु निहारी । यारी तेज पुंज उँजियारी ॥४॥

॥ शब्द १५ ॥

मिथ्या जीवन मिथ्या है तन, या धन जो नहिं परसन[6] ॥टेक॥
हम रे जाइब चलि कर, छटा जहाँ बंसी धुन ॥ १ ॥
त्रिकुटी तट तिलक सोधो, येही भजन ॥ २ ॥

---

(१) मेरुडंड । (२) बाना, भेष । (३) बरतन जिसमें दूध दुहा जाता है । (४) वह कामधेनु बिना देह की है । (५) भोजन किया । (६) जो मालिक के भक्ति रूप धन को न परसा ।

साध बोला कमल खोला, अमृत बचन ॥ ३ ॥
निःचय करि ध्यान धरु, पावहु दरसन ॥ ४ ॥
यारी गावै सब्द सुनावै, सुनो साधु जन ॥ ५ ॥
सुन्न तें नित तारी लावो, सूझि है निर्गुन ॥ ६ ॥

॥ शब्द १६ ॥

तूं ब्रह्म चीन्हो रे ब्रह्मज्ञानी ॥ १ ॥
समुझि बिचारि देखु नीके करि, ज्यों दर्पन मधि अलख निसानी ।२
कहै यारी सुनो ब्रह्मज्ञानी, जगमग जोति निसानी ॥ ३ ॥

॥ शब्द १७ ॥

उरधमुख भाठी, अवटौं कौनी भाँति ।
अर्ध उर्ध दोउ जोग लगायो, गगन मँडल भयो माठ[1] ॥ १ ॥
गुरु दियो ज्ञान ध्यान हम पायो, कर करनी कर ठाट ।
हरि के मद मतवाल रहत है, चलत उबट की बाट ॥ २ ॥
आपा उलटि के अमी चुवाओ, तिरबेनी के घाट ।
प्रेम पियाला सुति भरि पीवो, देखो उलटी बाट ॥ ३ ॥
पाँच तत्त एक जोति समानो, धर छःवो मन हाथ ।
कह यारी सुनियो भाइ संतो, छकि छकि रहि भयो मात[2] ॥४॥

॥ शब्द १८ ॥

राम रमझनी[3] यारी जीव के ॥ टेक ॥
घट में प्रान अपान दुबाई[4] । अरध उरध आवै अरु जाई ॥१॥
लेके प्रान अपान मिलावै । वाही पवन तें गगन गरजावै ॥२॥
गरजै गगन जो दामिनि दमकै । मुक्ताहल रिमझिम तहँ बरखै ।३।
वा मुक्ता महँ सुरति परोवे । सुरति सब्द मिल मानिक होवे ।४।
मानिक जोति बहुत उँजियारा । कह यारी सोइ सिरजनहारा ।५।
साहब सिरजनहार गुसाइं । जा में हम सोई हम माहीं ॥६॥

(१) बरतन । (२) मतवाला । (३) रमझनी करना गँवारी भाषा में रात दिन किसी बात की चरचा करने को कहते हैं । (४) दो वायु ।

जैसे कुंभ नीर बिच भरिया। बाहर भीतर खालिक[1] दरिया ॥७॥
उठ तरंग तहँ मानिक मोती। कोटिन चंद सूर कै जोती ॥८॥
एक किरिन का सकल पसारा। अगम पुरुष सब कीन्ह नियारा॥९॥
उलटि किरिन जब सूर समानी। तब आपनि गति आपुहिं जानी ॥१०॥
कह यारी कोइ अवर न दूजा। आपुहि ठाकुर आपुहिं पूजा।११।
पूजा सत्तपुरुष का कीजे। आपा मेटि चरन चित दीजे ॥१२॥
उनमुनि रहनि सकल को त्यागी। नवधा प्रीति बिरह बैरागी।१३।
बिनु बैराग भेद नहिं पावै। केतो पढ़ि पढ़ि रचि रचि गावै।१४।
जो गावै ता को अरथ बिचारै। आपु तरै औरन को तारै।१५।

॥ दोहा ॥

तारनहार समर्थ है, और न दूजा कोय।
कह यारी सतगुरु मिलैं, अचल अमर तब होय ॥१६॥

॥ शब्द १९ ॥

सतगुरु है सतपुरुष अकेला। पिंड ब्रह्मंड के बाहर मेला ॥१॥
दूर तें दूर ऊँच तें ऊँचा। बाट न घाट गली नहिं कूचा ॥२॥
आदि न अंत मध्य नहिं तीरा। अगम अपार अति गहिर गँभीरा॥३
कच्छ[2] दृष्टि तह ध्यान लगावै। पल मह कीट भृङ्ग होइ जावै।४।
जैसे चकोर चंद के पासा। दीसै धरती बसै अकासा ॥५॥
कह यारी ऐसे मन लावै। तब चातृक स्वाँती जल पावै ॥६॥

॥ शब्द २० ॥

सुन्न के मुकाम में बेचून[3] की निसानी है ॥ १ ॥
जिकिर[4] रूह सोई अनहद बानी है ॥ २ ॥
अगम को गम्म नाहीं झलक पिसानी[5] है ॥ ३ ॥
कहै यारी आपा चीन्हे सोई ब्रह्मज्ञानी है ॥ ४ ॥

॥ शब्द २१ ॥

उड़ु उड़ रे बिहंगम चढ़ु अकास ॥ १ ॥

(१) पैदा करने वाला। (२) कछुआ जो सुरत से अपने अंडे को सेता है। (३) मालिक। (४) सुमिरन। (५) पेशानी, माथा।

जहँ नहिं चाँद सूर निस बासर, सदा अमरपुर अगम बास ॥२॥
देखै उरध अगाध निरंतर, हरष सोक नहिं जम के त्रास ॥३॥
कह यारी उहँ बधिक फाँस नहिं, फल पायो जगमग परकास ॥४॥

अलिफ़नामा

(ककहरा फ़ारसी का)

(१)

॥ दोहा ॥

ओंकार के पार भजु, तजि अभिमान कलेस ।
तीसो अच्छर प्रेम के, येही बड़ उपदेस ॥ १ ॥
अलिफ़–एक अबिनासी देव । अविगत अपरम्पारहिं भेव ।
ताहि धरो धरि ध्यान हजूर । सो सब ठौर रहा भर पूर ॥२॥
बे–बिन जिभ्या सुमिरन करै । उनमुनि सों मन की धुनि धरै ।
पूरन ब्रह्म जहाँ तहँ आप । ताहि जाप को कीजै जाप ॥३॥
ते–तत्त सोधि कै लीजै । मथन करत सोच नहिं कीजै ।
सुरति निरति जो राखै कोई । तौ लव लगै परंगत[1] होई ॥४॥
से–साबित दिल खोजै देह । बोलनहार जगत गुरु जेह ।
घट घट बोलैं रमता राम । नाद बरन नारायन नाम ॥५॥
जीम–जुगति बिनु जोग न होई । वा तन प्रेम न उपजै कोई ।
नाद बरन जो लावै ध्यान । सो जोगी जुग जुग परमान ॥६॥
हे–हद में क्यों करो रेल । बेहद में मुक्ता है खेल ।
सुन्न सहज में रहै समाय । ता का आवागवन नसाय ॥७॥
ख़े–ख़ाविंद को जो कोई ध्यावै । अरध उरध बिच तारी लावै ।
साँस उसाँस से सुमिरन मंडे । करम कटै चौरासी खंडे ॥८॥
दाल–दसो दिसि खोजै ताही । मूल द्वार बाँधै चित जाही ।
ब्रह्म अगिन तबहीं उपजाइ । तीन लोक सुमिरौ रे भाई ॥९॥
ज़ाल–ज़ौक़[2] पाँचो का भानु[3] । बाहर जाते भीतर आनु[4] ।

(१) परम गति को प्राप्त हो । (२) मज़ा । (३) तोड़ दो, नष्ट करो । (४) लावो ।

मेलि दसो दिसि इक मन करै । सो साधू कहु कैसे मरै ॥१०॥
रे–रावन है पूरे आसन । बैठे प्रेम तत्त सिंहासन ।
त्रिकुटी लोक मेल करि जोरै । सहजहिं लंका गढ़ तब तोरै ।११।
ज़े–जोर सों सीध चलावै । गंग जमुन सरसुती[1] मिलावै ।
तिरबेनी मन में असनान । हरि जल भींजहिं संत सुजान ॥१२॥
सीन–सुखमन केरी नौबत बाजै । अनहद घोर गगन में गाजै ।
धर बरसावै अम्मर भरै । ता की सेवा गोरख करै ॥१३॥
शीन–शोर का नाहीं काम । इंगल पिंगल बोलहिं राम ।
तारी लागा दसवें द्वार । तत्त निरंजन ओअंकार ॥१४॥
साद–सबूर सिदक़[2] जो होई । अजरा जरै सो अमरा होई ।
नौ नाड़ी का जानै भेव । तौ ता को बंदै[3] सुकदेव ॥१५॥
ज़ाद–ज़रूरत सुखमन जोई । चाँद सूर बिच भाठी होई ।
पीवै अमृत मन परचंड । खेलै एक एक ब्रह्मंड ॥१६॥
तो–तौर औरै खेलै ख्याल । नाथै नाग पैठि पाताल ।
बामी उलटि सर्प को खाय । मंत्री दीसै[4] सहज समाय ॥१७॥
ज़ो–ज़ालिम कुछ पूछै मन । बंकनाल को राखै सम ।
फूटै चक्र मिटै सब छोती[5] । चौमुख दीसै जगमग जोती ॥१८॥
ऐन–इनायत[6] हरि की बढ़ै । चंद उतारै सूरज चढ़ै[7] ।
बिगसै कँवल भँवर महँ जाई । महकै बास गगन को धाई ।१९।
ग़ैन–ग़ुस्सा तजि कै धारै ध्यान । पच्छिम दिसा जो उगवै भान ।
भँवर गुफा में रहै समाय । होय अमर फिर काल न खाय ॥२०॥
फ़े–फ़हम आनि[8] कुमति को पेल । आपा मेटि अलख होइ खेल ।
दुमती मरन एक करि जान । सतगुरु यों दें पद निर्बान ॥२१॥
क़ाफ़–क़रार[9] यही है मेरा । सतगुरु साहब बंदा तेरा ।

---

(१) इँगला, पिंगला और सुषमना नाड़ियाँ । (२) सचाई । (३) उसको सुकदेव मुनि बंदना करैं । (४) मंत्र जानने वाला देखै । (५) छूत । (६) दया । (७) बाँयाँ स्वाँसा उतारै और दायाँ स्वाँसा चढ़ावै । (८) सुमति । (९) प्रतिज्ञा ।

दे उपदेस मिलावहिं राम । हौं बलिहारी गुरु के नाम ॥२२॥
काफ़-कुमारग कूप कुआला[1] । तृस्ना मोह भरम जंजाला ।
ये आपुहिंसों तजु रे प्रानी । सतगुरु बोलहिं अमृत बानी ॥२३॥
लाम-लोभ लालच चतुराई । इन के छोड़े होय भलाई ।
जिभ्या अवर लँगोटी राखी[2] । सब साधुन मिलि बोलहि साखी २४
मीम-महादेव औेर सुकदेव । तीनौ लोक के जानहिं भेव ।
जो इनके मारग महँ चलै । त्रिभुवन सूझै अबिरति[3] मिलै ॥२५॥
नूँ-नूतन[4] हेरौ हरि की काया । ना तौ जनम अकारथ जाया ।
रामहिं सुमिरौ तजौ बिकारा । भजि भगवंत उतरु भव पारा । २६
वाव-वही है अवर न दूजा । आपुहि ठाकुर आपुहि पूजा ।
आपुहिं आपु और नहि आनी[5] । ऐसा साधू है ब्रह्मज्ञानी ॥ २७
हे-हाँसी जनि जानहु येह । आतम आपुहिं देखहु देह ।
घट घट में आपुहिं रमि रहा । गुरु जेहि होइ सोई पद लहा ।२८
नाम लाय चित खेलहु खेला । आपुहिं गुरू आपुहीं चेला ।
आपुहिं आवै आपुहिं जाय। और कहा मोहिं देहु बताय ।२६।
लाम अलिफ़-एक तें हुआ अनेक। आदि अंत फिरि एकहि एक।
उनमुनि में ममता मन त्यागी । आपा मेटि चरन में लागी ॥३०॥
हमज़ा-हम[6] जाइ हरि सुमिरन करै। बिनु परियास[7] भवसागर तरै।
एक पलक नहिं दूसरि आसा । करम करै चौरासी नासा ॥३१॥
ये-यारी हरिजी सों कीजै । निस दिन प्रेम भक्ति करि लीजै ।
हरि हरि करते आपा खोवै । तब हरि में हरि अपुहि होवै ॥३२

(२)

अलिफ़-एक हरि नाम बिचार ।
बे-भजु बिस्व-तारन संसार ॥ १ ॥

(१) कुवर । (२) जिभ्या इंद्री और काम इन्द्री को बस में रक्खै । (३) वृत्ति से रहित अवस्था । (४) सुन्दर । (५) दूसरा । (६) हँगता । (७) मिहनत ।

ते–त्रिभुवन सब घट में राजा।
से–साबित जे चित में साजा ॥ २ ॥
जीम–जगत-पति हिरदे राखहु।
हे–हलीम[१] है गुरु हरि भाषहु ॥ ३ ॥
ख़े–ख़्यालक छोड़हु सब ही झूठ[२]।
दाल–दयालहिं सुमिरहु हिये अनूठ[२] ॥ ४ ॥
ज़ाल–ज़ात[३] में राखहु प्रीती।
रे–राम सुमिरु मन तजि जग चीती ॥ ५ ॥
ज़े–ज़ुहद[४] से भजु हरि नाम।
सीन–सचेत जो आवै काम ॥ ६ ॥
शीन–शुकर कर दीना नाथ।
साद–सबूरी[५] राखहु साथ ॥ ७ ॥
ज़ाद–ज़रूर पाँच परधान।
तो–तमा[६] झूठ करि जान ॥ ८ ॥
ज़ो–ज़ालिम क्रोधहि समझाव।
ऐन–अमल[७] में रहु सत भाव ॥ ९ ॥
ग़ैन–ग़रूर बुरा जो काम।
फ़े–फ़ाज़िल जो सुमिरै नाम॥ १० ॥
क़ाफ़–क़नाअत[५] हिरदे मानहु।
काफ़–काम झूठ करि जानहु ॥ ११ ॥
गाफ़–गुरू का सिर पर हाथ।
लाम–लाज तुम छोड़हु साथ॥ १२ ॥
मीम–मुराशद[८] जग को तारै।
नूँ–नाम सब दुक्ख निवारै ॥ १३ ॥

---

(१) धीर। (२) ख़्यालक यानी विद्या बुद्धि के गढ़े हुए इष्टों को छोड़ कर एक सच्चे दयाल मालिक ही को जो कि अपूर्व या अनूठा है हृदय से याद करो। (३) मालिक की ज़ात। (४) संजम, परहेज़। (५) संतोष। (६) लोभ। (७) अभ्यास। (८) गुरू।

वाव—वाहि भजु स्वाँसा जाई।
हे—हरि मनहिं राखु लव लाई॥ १४॥
लाम अलिफ़—लाज मन धरहू।
हमज़ा—हरि नित सुमिरन करहू॥ १५॥
ये—यारी हरि हिये में राखहु।
बड़ी ये—यार से सत्तै भाखहु॥ १६॥

—:※:—

॥ कबित्त ॥

(१)

लेइ स्याही द्वात माहिं तौलै तो अच्छर नाहि,
कुल सेती रूप न्यारो न्यारो निकरि आयो है।
सुन्न के कागद पर मानिक कलम लिये,
चित्त की कसीसी करि अच्छर बनायो है॥
अरथ अच्छर माहिं आँधरे को सूझै नाहिं,
दाना बीना[१] जिन पढ़िके सुनायो है।
यारी आदि ओंकार जा सों यह भयो संसार,
अच्छर दवात बीच ढूँढ़े नाहि पायो है॥

(२)

गैब का तख्त औ गैब की बादसाही,
गैब का छत्र नूर जगमग जोत है।
गैब का हुकुम तिहुँ लोक पर हाकिमी,
गैब का खजाना देखो काम सब होत है॥
गैब की बिलाइत में गैब करै बादसाही,
गैब में बेऐब, नाहिं पाप पुन्न छोत[१] है।
कहैं यारी आय देख सोई है अलख अलेख,
ऐसी बादसाही पाय बादहीं तूँ खोत है॥

(१) समझ बूझ वाले। (२) छूत।

(३)

आँधरे को हाथी हरि हाथ जा को जैसो आयो,
बूझो जिन जैसो तिन तैसोई बतायो है ॥
टकाटोरी दिन रैन हिये हूँ के फूटे नैन,
आँधरे की आरसी में कहा दरसायो है ॥
मूल की खबरि नाहि जा सों यह भयो मुलुक,
वा को बिसारि भोंदू डारै[२] अरुझायो है।
आपनो सरूप रूप आपु माहिं देखै नाहिं,
कहै यारी आँधरे ने हाथ कैसो पायो है ॥

(४)

गावै गगन तान सुनियत बिना कान,
बिना नैन देखियत अलख मकान है।
सुरति चढ़ी कमान छेदि गयो आसमान,
लामकान[३] का मकान उदै भयो भान है ॥
कहै यारी सुजान मेरो कहो लीजै मान,
सोई सूर ज्ञानी जा के हिरदे सदा ध्यान है ॥

(५)

आँखि कान नाक मुँह मूँदि कै निहार देखु,
सुन्न में जोति याही परगट गुरु ज्ञान है।
त्रिकुटी में चित्त देइ ध्यान धरि देखु तहाँ,
दामिनि दमकै चाचरी मुद्रा को अस्थान है ॥
भूचरी मुद्रा सोहाग जागै मस्तक,
भाग पायो सकल निरंतर की खान है ॥
गगन गुफा में पैठि अधर आसन बैठि,
खेचरी मुद्रा अकास फूलै निर्बान है ॥

(१) शाखा। (२) त्रिकुटी जो सूरज ब्रह्म का स्थान है।

(६)

गयो सो गयो बहुरि नहिं आयो,
दूरि तें अंतर गवन कियो तिहुँ लोक दिखायो ।
तेहू तें आगे दूर तें दूरि, परे तें परे जाइ छायो ॥
यारी कहैं अति पूरन तेज, सो देखि सरूप पतंग समायो ।
आवै न जाय मरै नहिं जीवै, हलै न टलै तहवाँ ठहरायो ॥

(७)

एक कहो सो अनेक ह्वै दीसत, एक अनेक धरे है सरीरा ।
आदिहि तौ फिर अंतहु भी, मद्ध सोई हरि गहिर गँभीरा ॥
गोप कहो सो अगोप सों देखो, जोति सरूप बिचारत हीरा ।
कहे सुने बिनु कोइ न पावै, सो कहि के सुनावत यारी फकीरा ॥

(८)

देखु बिचारि हिये अपने नर, देह धरो तौ कहा बिगरो है ।
यह मट्टी को खेल खिलौना बनो, एक भाजन[२] नाम अनंत धरो है॥
नेक प्रतीत हिये नहिं आवत, भर्म भुलो नर अवर करो है ।
भूषन ताहि गँवाइ के देखु, यारी कंचन औन को औन[३] धरो है ॥

(९)

गहने के गढ़े तें कहीं सोनो भी जातु है,
सोनो बीच गहनो और गहनो बीच सोन है ॥
भीतर भी सोनो और बाहर भी सोन दीसै,
सोनो तो अचल अंत गहनो को मीच[४] है ॥
सोन को तो जानि लीजै गहनो बरबाद कीजै,
यारी एक सोनो ता में ऊँच कवन नीच है ॥

—:*:—

॥ झूलना ॥

(१)

बिन बंदगी इस आलम[५] में, खाना तुझे हराम है रे ।
बंदा करै सोइ बंदगी, खिदमत में आठो जाम है रे ॥

(१) गुन । (२) बरतन । (३) ठीक का ठीक, ज्यों का त्यों । (४) मृत्यु । (५ दुनिया ।

यारी मौला बिसारि के, तू क्या लागा बेकाम है रे।
कुछ जीते बंदगी कर ले, आखिर को गोर[१] मुकाम है रे॥

(२)

आँखी सेती जो देखिये, सो तो आलम फ़ानी[२] है।
कानों सेती जो सुनिये रे, सो तो जैसे कहानी है॥
इस बोलते को उलटि देखै, सोइ आरिफ़[३] सोइ ज्ञानी है।
यारी कहै यह बूझि देखा, और सबै नादानी है॥

(३)

दोउ मूँदि के नैन अंदर देखा, नहिं चाँद सुरज दिन राति है रे।
रोसन समा[४] बिनु तेल बाती, उस जोति सों सबै सिफाति[५] है रे॥
गोता मारि देखो आदम, कोउ अवर नाहिं सँग साथि है रे।
यारी कहै तहकीक किया, तू मलकुल्मौत[६] की जाति है रे॥

(४)

आँखिन चितै के पग बंधा, और साधा गगन को है रे।
उत्तर दिसा गवन कीया, फिर जाय देखा उस बन को रे॥
सागर बीच में बुन्द को लाय, उलटि मारा उस मन को रे।
यारी कहै अकल[७] कला, बिन नैन देखा दरसन को रे॥

(५)

धरती मिली आकास को रे, ऊँचे महल में बास पाया।
समुंद में केल कियो मछरी, पहार उपर जाय घर छाया॥
फूल सेती कली भई, मिलि चाँद सुरज दोउ घर आया।
यारी कहै देखो जीभ बिना, अनहद के तान गगन गाया॥

(६)

सूली के पार मेहर पेखा, मलकूत जबरूत लाहूत तीनो[८]।
लाहूत आगे तीन सुन्न है रे, हाहूत के रस में रंग भीनो[९]॥

---

(१) क़ब्र। (२) नाश होने वाला। (३) पहिचानने वाला, महात्मा। (४) आसमान (५) गुन। (६) मौत या काल का फ़रिश्ता या दूत। (७) जिस काम या खेल को कोई न कर सके। (८) सूरज। (९) मलकूत = देवलोक, जबरूत = सहसदल कँवल; लाहूत = त्रिकुटि, हाहूत = सुन्न या संतों का दसवाँ द्वार।

धुवाँ होइ के ऊपर चढ़ो, मुतलक मोती का नूर चूनो।
आँखिन चितै के बैठ यारी, माते माते माते बूनो[1] ॥

(७)

गुरु के चरन की रज लै के, दोउ नैन के बीच अंजन दीया।
तिमिर मेटि उजियार हुआ, निरंकार पिया को देखि लिया ॥
कोटि सुरज तहँ छपे घने, तीनि लोक धनी धन पाइ पिया।
सतगुरु ने जो करी किरपा, मरि के यारी जुग जुग जीया ॥

(८)

जहँ रूप न रेख न रंग है रे, बिन रूप सिफात[2] में आप फूला।
फूल बिना जहँ बास है रे, निर्बास के बास भँवर भूला ॥
उहाँ दह[3] बिना कँवल है रे, कँवल की जोति अलख तोला।
यारी अलम[4] मलोल[5] नहीं, जहँ फूल देखा बिन डार मूला ॥

(९)

जहँ मूल न डारि न पात है रे, बिन सींचे बाग सहज फूला।
बिन डाँड़ी का फूल है रे, निर्बास के बास भँवर भूला ॥
दरियाव के पार हिंडोलना रे, कोउ बिरही बिरला जा झूला।
यारी कहै इस झूलने में, झूले कोऊ आसिक दोला[6] ॥

(१०)

जब लग खोजे चला जावे, तब लग मुद्दा[7] नहिं हाथ आवे।
जब खोज मरै तब घर करै, फिर खोज पकर के बैठ जावै ॥
आप में आप को आप देखै, और कहूँ नहिं चित्त जावै।
यारी मुद्दा हासिल हुआ, आगे को चलना क्या भावै ॥

(११)

जमीं बरखै असमान भींजै, बिन बातिहिं तेल जलाइये जी।
उहाँ नूर तजल्ली[8] बीच है रे, बेरंगी रंग दिखाइये जी ॥
फूल बिना जदि फल होवै, तदि हीर[9] की लज्जत पाइये जी।

(१) माते यानी मस्त हो कर मोतियों को गुथो। (२) गुन। (३) जहाँ गहिरा पानी हो। (४) दुख। (५) फिक्र। (६) झूला (७) मुद्दआ अर्थात सार वस्तु। (८) प्रकाश। (९) गूदा।

यारी कहै यहि कौन बूझै, यह का सों बात जनाइये जी ॥

(१२)

अंधा पूछै आफ़ताब[१] को रे, उसे किस मिसाल बतलाइये जी ।
वा नूर समान नहीं औरै, कवने तमसील[२] सुनाइये जी ॥
सब अँधरे मिलि दलील करैं, बिन दीदा दीदार न पाइये जी ।
यारी अंदर यकीन बिना, इलिम से क्या बतलाइये जी ॥

(१३)

चाँद बिना जहँ चाँदनी रे, दीपक बिना जगमग जोती ।
गगन बिना दामिनि देखो, सीप बिना सागर मोती ॥
दह[३] बिना कँवल है रे, अच्छर है बिन कागद सेती ।
अनगउवा[४] का दूध यारी बद[५], बाँझ के पूत कै जाति गोती ॥

(१४)

गगन गुफा में बैठि के रे, अजपा जपै बिन जीभि सेती ।
त्रिकुटी संगम जोति है रे, तहँ देख लेवै गुरु ज्ञान सेती ॥
सुन्न गुफा में ध्यान धरै, अनहद सुनै बिन कान सेती ।
यारी कहै सो साध है रे, बिचार लेवै गुरु ज्ञान सेती ॥

(१५)

गगन गुफा में बैठि के रे, उलटि के अपना आप देखै ।
अजपा जपै बिन जीभि सों रे, बिन नैन निरंजन रूप लेखै ॥
जोति बिना दीपक है रे, दीपक बिना जगमग पेखै ।
यारी अलख अलेख है रे, भेष के भीतर भेष भेषै ॥

(१६)

हम तो एक हुबाब[६] हैं रे, साकिन[७] बहर[८] के बीच सदा ।
दरियाव के बीच दरियाव कै मौज है, बाहर नाहीं ग़ैर ख़ुदा ॥
उठने में हुबाब है देखो, मिटने में मुतलक़ सौदा[९] ।
हुबाब तो ऐन दरियाव यारी, वोहि नाम धरो है बुदबुदा ॥

---

(१) सूरज । (२) मिसाल, दृष्टान्त । (३) जहाँ गहिरा पानी हो । (४) बिना गऊ । (५) बढ़ता यानी ठहराता है । (६) पानी का बुल्ला । (७) रहने वाले । (८) समुद्र । (९) बावलापन ।

(१७)
आब के बीच निमक जैसे, सब लोहै येहि मिलि जावै।
यह भेद की बात अवर है रे, यह बात मेरे नहिं मन भावै॥
गवास[1] होइ के अंदर धसई, आदर सँवार के जोति लावै।
यारी मुद्दा हासिल हूआ, आगे को चलना क्या भावै॥

॥ साखी ॥

जोति सरूपी आतमा, घट घट रहो समाय।
परम तत्त मन भावनो, नेक न इत उत जाय॥ १॥
रूप रेख बरनौं कहा, कोटि सूर परगास।
अगम अगोचर रूप है, [कोउ] पावै हरि को दास॥ २॥
नैनन आगे देखिये, तेज पुंज जगदीस।
बाहर भीतर रमि रह्यो, सो धरि राखो सीस॥ ३॥
बाजत अनहद बाँसुरी, तिरबेनी के तीर।
राग छतीसो होइ रहे, गरजत गगन गँभीर॥ ४॥
आठ पहर निरखत रहौ, सन्मुख सदा हजूर।
कह यारी घरहीं मिलै, काहे जाते दूर॥ ५॥
बेला फूला गगन में, बंकनाल गहि मूल।
नहिं उपजै नहिं बीनसै, सदा फूल कै फूल॥ ६॥
दच्छिन दिसा मोर नइहरो, उत्तर पंथ ससुराल।
मानसरोवर ताल है, [तहँ] कामिनि करत सिंगार॥ ७॥
आतम नारि सुहागिनी, सुंदर आपु सँवारि।
पिय मिलबे को उठि चली, चौमुख दियना बारि॥ ८॥
धरति अकास के बाहरे, यारी पिय दीदार।
सेत छत्र तहँ जगमगै, सेत फटिक उँजियार॥ ९॥
तारनहार समर्थ है, अवर न दूजा कोय।
कह यारी सतगुरु मिलै, [तौ] अचल अरु अम्मर होय॥१०॥

॥ इति ॥

(१) ग़ौवास = गोता लगाने वाला।

यारी कहै यहि कौन बूझै, यह का सों बात जनाइये जी ॥

(१२)

अंधा पूछै आफ़ताब[1] को रे, उसे किस मिसाल बतलाइये जी ।
वा नूर समान नहीं औरै, कवने तमसील[2] सुनाइये जी ॥
सब अँधरे मिलि दलील करैं, बिन दीदा दीदार न पाइये जी ।
यारी अंदर यकीन बिना, इल्मि से क्या बतलाइये जी ॥

(१३)

चाँद बिना जहँ चाँदनी रे, दीपक बिना जगमग जोती ।
गगन बिना दामिनि देखो, सीप बिना सागर मोती ॥
दह[3] बिना कँवल है रे, अच्छर है बिन कागद सेती ।
अनगउवा[4] का दूध यारी बद[5], बाँझ के पूत कै जाति गोती ॥

(१४)

गगन गुफा में बैठि के रे, अजपा जपै बिन जीभि सेती ।
त्रिकुटी संगम जोति है रे, तहँ देख लेवै गुरु ज्ञान सेती ॥
सुन्न गुफा में ध्यान धरै, अनहद सुनै बिन कान सेती ।
यारी कहै सो साध है रे, बिचार लेवै गुरु ज्ञान सेती ॥

(१५)

गगन गुफा में बैठि के रे, उलटि के अपना आप देखै ।
अजपा जपै बिन जीभि सों रे, बिन नैन निरंजन रूप लेखै ॥
जोति बिना दीपक है रे, दीपक बिना जगमग पेखै ।
यारी अलख अलेख है रे, भेष के भीतर भेष भेषै ॥

(१६)

हम तो एक हुबाब[6] हैं रे, साकिन[7] बहर[8] के बीच सदा ।
दरियाव के बीच दरियाव कै मौज है, बाहर नाहीं गैर ख़ुदा ॥
उठने में हुबाब है देखो, मिटने में मुतलक़ सौदा[9] ।
हुबाब तो ऐन दरियाव यारी, वोहि नाम धरो है बुदबुदा ॥

---

(१) सूरज । (२) मिसाल, दृष्टान्त । (३) जहाँ गहिरा पानी हो । (४) बिना गऊ । (५) बढ़ता यानी ठहराता है । (६) पानी का बुल्ला । (७) रहने वाले । (८) समुद्र । (९) बावलापन ।

(१७)

आब के बीच निमक जैसे, सब लोहै येहि मिलि जावै।
यह भेद की बात अवर है रे, यह बात मेरे नहिं मन भावै ॥
गवास[1] होइ के अंदर धसई, आदर सँवार के जोति लावै।
यारी मुद्दा हासिल हूआ, आगे को चलना क्या भावै ॥

॥ साखी ॥

जोति सरूपी आतमा, घट घट रहो समाय।
परम तत्त मन भावनो, नेक न इत उत जाय ॥ १ ॥
रूप रेख बरनौं कहा, कोटि सूर परगास।
अगम अगोचर रूप है, [कोउ] पावै हरि को दास ॥ २ ॥
नैनन आगे देखिये, तेज पुंज जगदीस।
बाहर भीतर रमि रह्यो, सो धरि राखो सीस ॥ ३ ॥
बाजत अनहद बाँसुरी, तिरबेनी के तीर।
राग छतीसो होइ रहे, गरजत गगन गँभीर ॥ ४ ॥
आठ पहर निरखत रहो, सन्मुख सदा हजूर।
कह यारी घरहीं मिलै, काहे जाते दूर ॥ ५ ॥
बेला फूला गगन में, बंकनाल गहि मूल।
नहिं उपजै नहिं बीनसै, सदा फूल के फूल ॥ ६ ॥
दच्छिन दिसा मोर नइहरो, उत्तर पंथ ससुराल।
मानसरोवर ताल है, [तहँ] कामिनि करत सिंगार ॥ ७ ॥
आतम नारि सुहागिनी, सुंदर आपु सँवारि।
पिय मिलबे को उठि चली, चौमुख दियना बारि ॥ ८ ॥
धरति अकास के बाहरे, यारी पिय दीदार।
सेत छत्र तहँ जगमगै, सेत फटिक उँजियार ॥ ९ ॥
तारनहार समर्थ है, अवर न दूजा कोय।
कह यारी सतगुरु मिलै, [तौ] अचल अरु अम्मर होय ॥१०॥

॥ इति ॥

(१) ग़ौवास = ग़ोता लगाने वाला।

आवश्यक सचना

संतबानी पुस्तकमाला के उन महात्माओं की लिस्ट जिनकी जीवनी तथा बानियाँ छप चुकी हैं

कबीर साहिब का अनुराग सागर
कबीर साहिब का बीजक
कबीर साहिब का साखी-संग्रह
कबीर साहिब की शब्दावली—चार भागों में
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते, भूलने
कबीर साहिब की अखरावती
धनी धरमदास की शब्दावली
तुलसी साहिब (हाथरस वाले) भाग १ 'शब्द'
तुलसी शब्दावली और पद्मसागर भाग २
तुलसी साहिब का रत्नसागर
तुलसी साहिब का घट रामायण—२ भागों में
दादू दयाल भाग १ 'साखी',—भाग २ "पद"
सुन्दरदास का सुन्दर बिलास
पलटू साहिब भाग १ कुंडलियाँ। भाग २ रेखते, भूलने, सवैया, अरिल, कवित्त। भाग ३ भजन और साखियाँ।
जगजीवन साहब—२ भागों में
दूलनदास जी की बानी
चरनदास जी की बानी, दो भागों में
गरीबदास जी की बानी
रैदास जी की बानी
दरिया साहिब (बिहार) का दरिया सागर
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी
दरिया साहिब (मारवाड़ वाले) की बानी
भीखा साहिब की शब्दावली
गुलाल साहिब की बानी
बाबा मलूकदास जी की बानी
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी
यारी साहिब की रत्नावली
बुल्ला साहिब का शब्दसार
केशवदास जी की अमीघूँट
धरनीदास जी की बानी
मीराबाई की शब्दावली
सहजोबाई का सहज-प्रकाश
दयाबाई की बानी
संतबानी संग्रह, भाग १ 'साखी'—भाग २ 'शब्द'
अहिल्या बाई (अँग्रेज़ी पद में)

अन्य महात्मा जिनकी जीवनी तथा बानियाँ नहीं मिल सकीं

१ पीपा जी। २ नामदेव जी। ३ सदना जी। ४ सूरदास जी। ५ स्वामी हरिदास जी। ६ नरसी मेहता। ७ नाभा जी। ८ काष्ठजिह्वा स्वामी।

प्रेमी और रसिक जनों से प्रार्थना है कि यदि ऊपर लिखे महात्माओं की असली जीवनी तथा उत्तम और मनोहर साखियाँ या पद जो संतबानी पुस्तकमाला के किसी ग्रन्थ में नहीं छपे हैं मिल सकें तो कृपा पूर्वक नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। इ कष्ट के लिए उनको हार्दिक धन्यवाद दिया जायगा। यदि पाठक महोदय ऊपर लिखे महात्माओं का असली चित्र भी प्राप्त कर सकें, तो उनसे प्रार्थना है कि नीचे लिखे पते से पत्र-व्यवहार करें। असली चित्र प्राप्ति के लिए उचित मूल्य या खर्च दिया जायगा।

मैनेजर—संतबानी पुस्तकमाला, बेलविडियर प्रेस, प्रयाग

संतबानी की संपूर्ण पुस्तकों का सूचीपत्र

संत महात्माओं का जीवन चरित्र संग्रह	१।)
लोक परलोक हितकारी	२)
कबीर साहिब का अनुराग सागर	१।।।)
कबीर साहिब का बीजक	१।।)
कबीर साहिब का साखी-संग्रह	२।।)
कबीर साहिब की शब्दावली, पहला भाग	१।।।)
कबीर साहिब की शब्दावली, दूसरा भाग	१।।।)
कबीर साहिब की शब्दावली, तीसरा भाग	।।।)
कबीर साहिब की शब्दावली, चौथा भाग	।।)
कबीर साहिब की ज्ञान-गुदड़ी, रेखते और झूलने	१)
कबीर साहिब की अखरावती	।।)
[illegible] धरमदास जी की शब्दावली	१)
[illegible]लसी साहिब हाथरस वाले की शब्दावली भाग १	२)
तुलसी साहिब दूसरा भाग पद्मसागर ग्रन्थ सहित	२)
तुलसी साहिब का रत्नसागर	२।।)
तुलसी साहिब का घटरामायण पहला भाग	३)
तुलसी साहिब का घटरामायण दूसरा भाग	३)
दादू दयाल की बानी भाग १ "साखी"	३)
दादू दयाल की बानी भाग २ "शब्द"	३)
सुन्दर विलास	२)
पलटू साहिब भाग १—कुण्डलियाँ	१।।।)
पलटू साहिब भाग २—रेखते, झूलने, अरिल, कवित्त, सवैया	१।।।)
पलटू साहिब भाग ३—भजन और साखियाँ	१।।।)
जगजीवन साहिब की बानी पहला भाग	१।।)
जगजीवन साहिब की बानी दूसरा भाग	१।।)
दूलनदास जी की बानी	।।−)
चरनदास जी की बानी, पहला भाग	१
चरनदास जी की बानी, दूसरा भाग	१।
गरीबदास जी की बानी	२।।
रैदास जी की बानी	१
दरिया साहिब बिहार का दरिया सागर	।।।
दरिया साहिब के चुने हुए पद और साखी	।।।
दरिया साहिब मारवाड़ वाले की बानी	।।।
भीखा साहिब की शब्दावली	१)
गुलाल साहिब की बानी	१।)
बाबा मलूकदास जी की बानी	।।।)
गुसाईं तुलसीदास जी की बारहमासी	=)
यारी साहिब की रत्नावली	।=)।।
बुल्ला साहिब का सब्दसार	।।)
केशवदास जी की अमींघूँट	।)
धरनीदास जी की बानी	।।)
मीराबाई की शब्दावली	१)
सहजोबाई का सहज-प्रकाश	१।)
दयाबाई की बानी	।।)
संतबानी संग्रह, भाग १ साखी [प्रत्येक महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित]	३)
संतबानी संग्रह, भाग २ शब्द [ऐसे महात्माओं के संक्षिप्त जीवन-चरित्र सहित जो भाग १ में नहीं हैं]	३)

संत महात्माओं के चित्र—

कबीर साहब	=)
दादूदयाल	=)
मीराबाई	=)
दरिया साहब बिहार	=)
मलूकदास	=)

गुरू नानक की प्राण सँगली भाग १ ... ३।।)

दाम में डाक महसूल व पैकिङ्ग शामिल नहीं है, वह अलग से लिया जावेगा।

[illegible]ता—मैनेजर, संतबानी पुस्तकमाला, बेलवीडियर प्रेस, प्रयाग।

[illegible] ३, मोतीलाल नेहरू रोड (विश्वविद्यालय के सामने)